शास्त्रार्थ परम्परा

एस.एस. उपाध्याय
पूर्व जनपद न्यायाधीश/पूर्व विधिक परामर्शदाता
मा0 राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
निवासः 301ए, कावेरी अपार्टमेन्ट्स, गोमती नगर विस्तार, लखनऊ
मो0 9453048988
ई-मेलः ssupadhyay28@gmail.com

शास्त्रार्थ परम्परा भारत की प्राचीन अकादमिक परम्परा रही है जिसका उद्भव वैदिक युग में हुआ था। 'वादे-वादे जायते तत्वबोधः' के सिद्धान्त से शास्त्रार्थ परम्परा की व्युत्पत्ति हुई थी। वैदिक युगीन विद्वानों का मत था कि किसी विषय पर परस्पर जितना संवाद एवं विमर्श होगा, उस विषय का गूढ़ पक्ष उतना ही स्पष्ट होता जाएगा। इसी धारणा से आचार्यगण व विद्वतगण आपस में जीवन और जगत के गूढ़ विषयों पर विमर्श अथवा परिचर्चा के कार्यक्रम आयोजित करते थे जिसे कालान्तर में शास्त्रार्थ कहा जाने लगा। शास्त्रार्थ का विषय प्रारम्भ में पराविद्या अर्थात् ब्रह्म विद्या हुआ करती थी परन्तु कालान्तर में उसमें अपरा विद्या अर्थात् सांसारिक विद्याएं भी सम्मिलित कर ली गयीं। अनेक नए-नए ज्ञान का सृजन वस्तुतः प्राचीन समय में इसी शास्त्रार्थ पद्धति से ही हुआ। कुल 108 उपनिषदों में से 'प्रश्नोपनिषद' इसका ज्वलंत उदाहरण है जिसमें शिष्यगण आचार्य से दर्शन पर तथा सांसारिक विषयों पर भी अनेकों प्रश्न करते हैं और आचार्य उनका उत्तर देते हैं। शास्त्रार्थ की यह परम्परा पूरी तरह मर्यादा, गंभीरता, अनुशासन एवं शालीनता के दायरे में होती थी जिसमें दम्भ, पाखंड अथवा पांडित्य के अनुचित व असंगत प्रदर्शन के लिए कोई स्थान नही होता था अपितु शास्त्रार्थ का एकमात्र आशय सत्य पर पहुँचना होता था। शास्त्रार्थ में पराजित हो जाने वाले विद्वान का विजेता अथवा विद्वत सभा द्वारा लेषमात्र भी उपहास व अपमान नही किया जाता था अपितु पराजित होने वाला बहुधा स्वयं विपक्षी के वैदुष्य की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुए उसकी विजय और अपनी पराजय की स्वयं घोषणा करता था और विजयी हुआ विद्वान विपक्षी को अत्यंत सम्मान देते हुए उसकी प्रशंसा करता था। शास्त्रार्थ का इतना स्वस्थ व गरिमापूर्ण दृष्टांत सनातनधर्मियों से इतर मानव सभ्यता के सम्पूर्ण ज्ञात इतिहास में अन्य किसी संस्कृति व सभ्यता में देखने व सुनने को नहीं मिलता है।

प्राचीन समय में शास्त्रार्थ की प्रक्रिया आदि पर विद्वानों के कई ग्रंथ सुलभ थे। उनमें से कतिपय ग्रंथ कालान्तर में तथा कुछ बौद्धकाल में विलुप्त हो गए और जो शेष बचे थे उन्हें 11वीं शताब्दी में विदेशी आक्रान्ता बख्तियार खिलजी ने भारतीय गुरुकुलों, आश्रमों तथा नालन्दा व तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों को जला देने से उनमें रखी गयी शास्त्रार्थ की मूल पांडुलिपियाँ भी नष्ट हो गयीं। संस्कृत वांग्मय में अभी भी उपलब्ध ऋषि गौतम के न्यायसूत्र, उपनिषदों विशेषकर प्रश्नोपनिषद, आयुर्वेद के ग्रंथ चरकसंहिता व सुश्रुत संहिता एवं बौद्ध ग्रन्थों में शास्त्रार्थ की प्रक्रिया एवं उसके नियमन के अनेकोनेक प्रमाण मिलते हैं। उपलब्ध शास्त्रों में उल्लिखित प्रक्रिया एवं दिशा-निर्देशों के अनुसार शास्त्रार्थ निम्नांकित तीन प्रकार के होते हैः

1. वाद (Ideal Debate)
2. जल्प (Bad Debate)
3. वितण्ड (Wrangling or Illegitimate Debate)

वादः शास्त्रार्थ की वाद पद्धति में वक्ता प्रमाणों के साथ अपने मत की स्थापना करता है और विपक्षी के मत अथवा तर्कों का खण्डन करता है। शास्त्रार्थ की इस परम्परा को आदर्श माना जाता है।

जल्पः जल्प पद्धति के शास्त्रार्थ में वक्ता प्रमाणों के बिना वैध, अवैध, उचित अथवा अनुचित तर्कों के सहारे अपने मत की स्थापना करता है और विपक्षी के मत का खण्डन करता है। जल्प पद्धति को विद्वान उचित नही मानते हैं। जल्प पद्धति के शास्त्रार्थ का ज्वलंत स्वरूप आज भी देखने को मिलता है। न्यायालयों में विधिवेत्ता जो बहस एवं तर्क प्रस्तुत करते हैं वह कदाचित जल्प कोटि का ही एक विधिक शास्त्रार्थ होता है।

जल्प पद्धति का एक प्रसिद्ध शास्त्रार्थ त्रेतायुग में राजा जनक के दरबार में महर्षि याज्ञवल्क्य तथा विदुषी गार्गी के मध्य संपन्न हुआ था जिसका विस्तृत विवरण **वृहदारण्यक उपनिषद** में मिलता है। राजा जनक ने सबसे बड़े ब्रह्म ज्ञानी की खोज करने के उद्देश्य से दूर-दूर से विद्वानों, ऋषियों, मुनियों, आचार्यों के बीच शास्त्रार्थ के प्रयोजन से एक सभा बुलाई। जनक ने 1000 गायों की सींगों में सोना मिढ़वा दिया और यह घोषणा की कि जो विद्वान शास्त्रार्थ में अन्य समस्त विद्वानों को ब्रह्म विद्या में पराजित कर देगा उसे समस्त 1000 गायें दान स्वरूप दे दी जावेंगी। विद्वत सभा में उपस्थित ऋषि याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्यों से कहा कि इन समस्त 1000 गायों को तुम लोग ले जाकर अपने आश्रम में

बांध दो। याज्ञवल्क्य की यह बात सुनकर अन्य विद्वान क्रुद्ध हो गये और गायें ले जाने से पहले उनसे शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। एक तरफ महर्षि याज्ञवल्क्य अकेले थे तो दूसरी तरफ विद्वानों की बड़ी सभा। तय हुआ कि समस्त विद्वानों की ओर से उद्दालक तथा अश्वल नामक दो विद्वान याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करेंगे। याज्ञवल्क्य ने सहज ही उद्दालक और अश्वल को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया। उसी सभा में उस युग की श्रेष्ठ ब्रह्मविदुषी गार्गी भी उपस्थित थीं। गार्गी उठ खड़ी हुई और याज्ञवल्क्य को उनसे शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से ब्रह्म विद्या संबंधी अनेकों दार्शनिक प्रश्न पूछे। याज्ञवल्क्य ने सभी प्रश्नों का समुचित उत्तर दिया। तब गार्गी ने याज्ञवल्क्य से अतिप्रश्न पूछने शुरू कर दिये। शास्त्रार्थ पद्धति में वक्ता से बार-बार एक ही विषय पर प्रश्न पूछने को अतिप्रश्न कहा जाता है और इसे शास्त्रार्थ की आदर्श पद्धति अर्थात् वाद पद्धति के विरूद्ध माना जाता है। वृहदारण्यक उपनिषद में आये कथानक के अनुसार गार्गी द्वारा याज्ञवल्क्य से पूछे गये अतिप्रश्न तथा याज्ञवल्क्य द्वारा दिये गये उनके उत्तर नीचे दृष्टव्य हैः

गार्गी के प्रश्न	**याज्ञवल्क्य के उत्तर**
1. जल कहाँ हैः	अन्तरिक्ष लोक में
2. अन्तरिक्ष लोक कहाँ हैः	गन्धर्व लोक में
3. गन्धर्व लोक कहाँ हैः	आदित्य लोक में अर्थात् सूर्यलोक में
4. आदित्य लोक कहाँ हैः	चन्द्रलोक अर्थात पितृ लोक में
5. चन्द्रलोक कहाँ हैः	नक्षत्र लोक में
6. नक्षत्र लोक कहाँ हैः	देवलोक में
7. देवलोक कहाँ हैः	इन्द्रलोक में
8. इन्द्रलोक कहाँ हैः	प्रजापति लोक में
9. प्रजापति लोक कहाँ हैः	ब्रह्मलोक में
10.ब्रह्मलोक कहाँ है:	?

गार्गी द्वारा पूछे गये उपरोक्त 10वें अति प्रश्न से क्रुद्ध होकर याज्ञवल्क्य ने कहाः गार्गी तुम्हारे द्वारा इस प्रकार के अति प्रश्न करने से तुम्हारा सिर धड़ से अलग होकर गिर जाएगा। तब गार्गी ने याज्ञवल्क्य से अपनी पराजय स्वीकार करते हुए स्वयं विद्वत सभा में खड़े होकर घोषणा की कि महर्षि याज्ञवल्क्य से विजयी हुए और उनसे बड़ा ब्रह्मज्ञानी संसार में कोई नही है।

वितण्डः वितण्ड पद्धति के शास्त्रार्थ में वक्ता बिना किसी प्रमाण के तथा उचित तर्क के अपने मत को प्रकट करता है और विपक्षी के प्रमाण आधारित तर्क संगत मतों का खण्डन करता है। वितण्ड विधा में वक्ता कुतर्कों के सहारे विपक्षी पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करता है। वितण्ड पद्धति के शास्त्रार्थ में वक्ता वस्तुतः विवाद अथवा झगड़ा करता है।

वितण्ड पद्धति के शास्त्रार्थ का ज्वलंत उदाहरण आठवीं शताब्दी में आदिशंकराचार्य तथा उस युग के प्रसिद्ध शास्त्रविद मंडन मिश्र की पत्नी उभय भारती के बीच संपन्न हुआ शास्त्रार्थ दृष्टव्य है। शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच शास्त्रार्थ की यह शर्त रखी गयी थी कि शास्त्रार्थ में जो पराजित हो जाएगा वह विपक्षी का शिष्य और सन्यासी बन जाएगा। मंडन मिश्र शास्त्रार्थ में आदिशंकराचार्य से पराजित हो गये परन्तु उनकी पत्नी उभय भारती मंडन मिश्र को शंकराचार्य का शिष्य और सन्यासी नही बनने देना चाहती थीं। उभय भारती ने शंकराचार्य जी को उनसे शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी और कहा कि मेरे पति तभी घर छोड़कर सन्यासवृत्ति धारण करेंगे और आपके शिष्य बनेंगे जब पहले आप मुझे शास्त्रार्थ में पराजित कर देंगे। शंकराचार्य इसके लिए तैयार हो गये। विद्वतसभा पुनः बैठी। शंकराचार्य और उभय भारती के बीच शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। उभय भारती जब शंकराचार्य जी के तर्कों और प्रमाणों से निरूत्तरित और पराजित हो गईं तो उन्होंने छल के सहारे शंकराचार्य जी को पराजित करने का मन बनाया। उभय भारती ने शंकराचार्य जी से कामशास्त्र पर एक के बाद एक कई प्रश्नों की बौछार कर दी। आदिशंकराचार्य बालब्रह्मचारी और बालसन्यासी थे, उन्हें कामशास्त्र का कोई ज्ञान और अनुभव नही था। कामशास्त्र की विविध कलाओं पर पूछे गये प्रश्नों में से एक का भी उत्तर शंकराचार्य नही दे सके। उभय भारती के पति मंडन मिश्र ने उभय भारती को मना भी किया कि एक बालसन्यासी से कामशास्त्र एवं उसकी विभिन्न कलाओं पर प्रश्न किया जाना अनुचित है परन्तु उभय भारती नही मानी और हठ किया कि या तो शंकराचार्य कामशास्त्र पर पूछे गये मेरे प्रश्नों का उत्तर दें अन्यथा मुझसे अपनी पराजय स्वीकार करें। शंकराचार्य ने अनुरोध किया कि उन्हें एक माह का समय दिया जावे और तब तक के लिए यह शास्त्रार्थ स्थगित कर दिया जावे, एक माह बाद वह पुनः शास्त्रार्थ के लिए उपस्थित होंगे और उभय भारती द्वारा कामशास्त्र एवं उसकी विविध कलाओं पर पूछे गये उनके सभी प्रश्नों का उत्तर देंगे। विद्वत सभा ने शास्त्रार्थ एक माह के लिए स्थगित कर दिया। शंकराचार्य शास्त्रार्थ स्थल को छोड़कर जब दुःखी मन से अपने शिष्यों सहित एक जंगल से होकर जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि जंगल में शिकार करने के लिए आया

हुआ एक युवा राजकुमार ताजा-ताजा मरा पड़ा है। शंकराचार्य उसके शव के पास जाकर बैठ गये और अपनी प्रबल योगमाया से अपने प्राणों को अपने शरीर से निकालकर अपना मृत शरीर शिष्यों की सुरक्षा में सौंप दिया और स्वयं परकाया प्रवेश की यौगिक क्रिया द्वारा मृत राजकुमार के शरीर में प्रवेश कर गये तथा जंगल से राजमहल में वापस आये। राजमहल में शंकराचार्य एक माह तक राजकुमार के शरीर में रहकर रानियों के सहवास में रहे और कामशास्त्र की समस्त कलाओं में दक्ष होकर वापस उभय भारती से शास्त्रार्थ के लिए पहुँचे। शास्त्रार्थ मण्डप सजाया गया, उभय भारती और शंकराचार्य में शास्त्रार्थ विद्वानों के समक्ष प्रारम्भ हुआ। इस बार कामशास्त्र पर उभय भारती द्वारा पूछे गये समस्त गूढ़ प्रश्नों का शंकराचार्य जी ने बहुत ही दक्षता और चातुर्य के साथ सटीक उत्तर दिया और अंत में उभय भारती निरूत्तरित होकर पराजित हो गयी। उभय भारती और आदिशंकराचार्य के मध्य संपन्न हुआ यह शास्त्रार्थ वितण्ड कोटि के शास्त्रार्थ का ज्वलंत उदाहरण है।

इतिहास में संपन्न हुए कतिपय प्रसिद्ध शास्त्रार्थ नीचे दृष्टव्य हैः

1. याज्ञवल्क्य-गार्गी शास्त्रार्थ
2. अष्टावक्र- जनक शास्त्रार्थ
3. अंगद-रावण संवाद
4. लक्ष्मण-रावण संवाद
5. काकभुशुण्डि-गरूड़ संवाद
6. यमराज-नचिकेता संवाद
7. शिव-पार्वती संवाद
8. श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद
9. यक्ष-युधिष्ठिर संवाद
10. युधिष्ठिर-भीष्म संवाद
11. धृतराष्ट्र-विदुर संवाद
12. आदिशंकराचार्य-मंडन मिश्र शास्त्रार्थ
13. आदिशंकराचार्य – उभय भारती शास्त्रार्थ
14. कुमारिल भट्ट – बौद्धभिक्षु शास्त्रार्थ
15. महर्षि दयानन्द सरस्वती – अनेक विद्वानों से शास्त्रार्थ

16. कालिदास- विद्योतमा शास्त्रार्थ

17. जगद्गुरु कृपालु महाराज-काशी विद्वत् परिषद शास्त्रार्थ

18. दिनांक 28.02.2021 को गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ स्थित कावेरी परिसर में शास्त्रों के 20 विद्वानों के मध्य निर्मित कुल 05 टीमों के बीच संपन्न शास्त्रार्थ। इस शास्त्रार्थ हेतु चयनित किये गये प्रश्नों तथा शास्त्रार्थ हेतु तैयार की गयी नियमावली सुधी पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दी जा रही है:

शास्त्रार्थ की प्रश्नावली (28.02.2021)

(1) जीव का वास्तविक स्वरूप और लक्ष्य क्या है?
(2) ब्रम्ह, जीव, माया का परस्पर सम्बन्ध क्या है?
(3) पुरुषार्थ चतुष्टय क्या है?
(4) सनातन धर्म के मूल तत्व क्या हैं?
(5) धर्म एवं अध्यात्म में क्या अन्तर है?
(6) अनासक्ति एवं कर्मफल सिद्धांत पर प्रकाश डालें।
(7) भक्ति–मार्ग, कर्म–मार्ग और ज्ञान–मार्ग में विभेद की व्याख्या कीजिए।
(8) अवतारवाद पर आपका क्या मत है?
(9) सगुण–निर्गुण उपासना पद्धतियों में क्या विभेद है?
(10) उपासना अथवा पूजा का वास्तविक स्वरूप एवं उसकी विधि क्या होनी चाहिए?
(11) ईश्वर के साक्षात्कार का सर्वाधिक उपयुक्त व सरल उपाय क्या है?
(12) नास्तिकता क्या है और नास्तिक कौन है?
(13) भारतीय संस्कृति के मूल तत्व क्या हैं?
(14) सनातन धर्म की 5 विशिष्टताएँ एवं 2 बड़ी कमजोरियाँ क्या हैं और उनके शमन के उपाय क्या हैं?
(15) 84 पंथों व सम्प्रदायों में विभक्त सनातन भारतीय समाज एवं सन्त समाज में पांन्थिक समन्वय व एकत्व की कितनी और किस प्रकार संभावना है?
(16) सनातन धर्मियों में पांथिक श्रेष्ठता के विवाद के समाधान हेतु आपके संगठन अथवा आश्रम ने अब तक क्या प्रयास किए हैं और आगे की योजना क्या है?
(17) सनातन भारतीय समाज एवं सनातन धर्म को लांक्षित करने वाले शास्त्रों में विद्यमान तमाम क्षेपकों को लेकर आपका मत क्या है? क्या इन्हें दूर किया जा सकता है? यदि हाँ तो आपके संगठन का सुझाव क्या है?
(18) धर्म एवं राजधर्म में क्या अन्तर है?

(19) मोक्ष, अर्थ, शिक्षा, धर्म, राजधर्म (राजनीति), सनातन धर्म का कोटिक्रम करिए तथा अपने द्वारा दी गई वरीयता का कारण बताइये।

(20) आधुनिक कथाकारों एवं प्रवचनकर्ताओं की भूमिका से क्या आप सन्तुष्ट हैं? कथावृत्ति एवं प्रवचनों की सार्थकता एवं उनमें आए दोषों के निवारण के उपाय क्या है?

(21) विश्व में कुल 204 राष्ट्र हैं, जिनमें से 53 इस्लामिक राष्ट्र हैं, 20 राष्ट्रों की राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय नीतियां इस्लाम के वर्चस्व को ध्यान में रखकर बनायी जाती हैं। शेष ईसाई, यहूदी व बौद्ध राष्ट्र हैं। सनातन धर्मियों का संसार में एक भी राष्ट्र क्यों नहीं है? इस पर प्रकाश डालें।

(22) सनातन धर्मावलम्बी किस एक स्वामी, सन्त अथवा सन्यासी की बात मान लें तो सनातन धर्मियों में एकत्व हो जावे और सनातन धर्मियों का भी संसार में एक राष्ट्र हो जावे?

(23) वीरभोग्या वसुन्धरा, ब्रम्हसत्यं जगतमिथ्या एवं मोक्ष की अवधारणाएं क्या एक–दूसरे के प्रतिकूल हैं अथवा पूरक? कृपया प्रकाश डालें।

(24) सनातन धर्मावलम्बियों अथवा हिन्दू समाज की 21वीं शताब्दी की चुनौतियों एवं उनके समाधान को लेकर संत समाज की भूमिका क्या होनी चाहिए?

शास्त्रार्थ के नियम (28.02.2021)

(1) शास्त्रार्थ हेतु चयनित किये गये विषयों/प्रश्नों की सूची, शास्त्रार्थ की नियमावली एवं क्षण–प्रति–क्षण कार्यक्रम की कॉपी प्रतिभाग करने वाली टीमों को शास्त्रार्थ की तिथि से 10 दिवस पूर्व तैयारी हेतु मेल अथवा अन्य साधनों से प्रेषित कर दी जावेगी।

(2) शास्त्रार्थ की अवधि तीन घण्टे होगी।

(3) शास्त्रार्थ के प्रतिभागियों एवं आमंत्रित अतिथिगण को कोविड–19 महामारी के नियमों का पालन करना आवश्यक होगा।

(4) शास्त्रार्थ में प्रतिभाग करने वाली प्रत्येक टीम में न्यूनतम 2 तथा अधिकतम 5 सदस्य होंगे।

(4क). लॉटरी/पर्ची के माध्यम से टीमों को टीम क्रमांक 1, 2, 3, 4, 5 नाम दिया जाएगा।

(5) प्रत्येक टीम को प्रवर्तित विषय/प्रश्न पर अपने विचार रखने के लिए अधिकतम 5 मिनट का समय दिया जावेगा। 4 मिनट बीतने पर पहली घण्टी, 4½ मिनट पर दूसरी घण्टी तथा 5 मिनट पूरे होने पर तीसरी घण्टी बजेगी और उसके 15 सेकेण्ड के अन्दर वक्ता को अनिवार्य रूप से अपना वक्तव्य समाप्त करना होगा।

(6) वक्ता के बोलने के दौरान उनकी टीम का अन्य सदस्य भी नियत समयावधि में अपनी बात रख सकेगा।

(7) शास्त्रार्थ की भाषा हिन्दी होगी।

(8) संस्कृत भाषा के वाक्य अथवा शास्त्रों से श्लोक आदि का उद्धरण देने पर वक्ता को उसका हिन्दी में अनुवाद एवं अर्थ बताना होगा।

(9) शास्त्रार्थ के दौरान शेर–ओ–शायरी बोलने की अनुमति नहीं होगी।

(10) शास्त्रार्थ के प्रतिभागी एवं श्रोतागण श्रेष्ठ बुद्धिजीवी वर्ग होंगे। कहने की आवश्यकता नहीं है कि शास्त्रार्थ के दौरान वक्ताओं को शालीनता, गंभीरता व गरिमा बनाये रखनी होगी।

(11) शास्त्रार्थ के दौरान किसी गुरु, पंथ अथवा वक्ता के प्रति अमर्यादित भाषा अथवा शब्दों का प्रयोग वर्जित होगा।

(12) किसी टीम/वक्ता को दूसरी टीम/वक्ता से विवाद करने, आक्षेप अथवा अशोभनीय टीका–टिप्पणी करने की कदापि अनुमति नहीं रहेगी। ऐसा करने पर संचालक मण्डल प्रथम बार चेतावनी दे सकेगा और पुनरावृत्ति होने पर सम्बन्धित वक्ता अथवा टीम को कार्यक्रम से चले जाने के लिए कह सकेगा।

(13) टीमें/वक्ता अपने द्वारा की गई किसी टीका टिप्पणी के लिए स्वयं वैधानिक रूप से उत्तरदायी होंगे, न कि आयोजक अथवा संचालक मण्डल।

(14) एक वक्ता के बोलने के दौरान दूसरा नहीं बोलेगा। कोई स्पष्टीकरण माँगने के लिए अन्य टीम के सदस्य हाँथ उठाकर संचालक मण्डल की अनुमति से वक्ता से प्रश्न कर सकेंगे।

(15) किसी वक्ता का वक्तव्य अथवा प्रश्नोत्तर अच्छा लगने पर श्रोता तथा दूसरी टीमों के सदस्यगण वक्ता की प्रशंसा में निम्नांकित शब्द बोलकर वक्ता का उत्साहवर्धन व साधुवाद प्रकट कर सकेंगे:

- साधु, साधु
- सुन्दरम्, सुन्दरम्
- शोभनम्, शोभनम्
- अति उत्तम, अति उत्तम

(16) संचालक मण्डल की अनुमति से श्रोताओं द्वारा वक्ता से स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिए प्रश्न किया जा सकेगा परन्तु स्पष्टीकरण से सन्तुष्ट नहीं होने पर प्रश्नकर्ता को वक्ता से पुनः प्रश्न करने की अनुमति नहीं होगी।

(17) वक्ता के बोलने के पश्चात् निर्णायक मण्डल अपनी टिप्पणी दे सकेगा और स्पष्टीकरण के लिए प्रश्न भी कर सकेगा।

(18) वक्ताओं को निर्णायक मण्डल से प्रश्न पूछने, उनके कथनों का खण्डन करने अथवा उनसे वाद–विवाद में पड़ने की अनुमति नहीं होगी।

(19) वक्ताओं की विद्वता व दक्षता का विनिश्चय तीन सदस्यीय निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा। निर्णायक मण्डल के वरिष्ठतम सदस्य निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष होंगे।

(20) शास्त्रार्थ के दौरान प्रत्येक टीम की विद्वता व दक्षता का मूल्यांकन 100 पूर्णांकों में किया जावेगा। निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष तथा प्रत्येक सदस्य के पास 20–20 अंक होंगे। पाँचों द्वारा दिए गए अंकों के योग के आधार पर निर्णायक मण्डल द्वारा विजेता एवं उप विजेता का निर्णय किया जावेगा जिसकी उद्घोषणा निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष अथवा उनके कहने पर अन्य सदस्य द्वारा किया जायेगा।

(21) पाँच श्रेष्ठ वक्ताओं को वरीयता अनुसार प्रशस्ति–पत्र दिया जावेगा जो निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष एवं दोनों सदस्यगण द्वारा हस्ताक्षरित होगा। परिणाम की उद्घोषणा अध्यक्ष द्वारा शास्त्रार्थ कार्यक्रम के अन्त में किया जावेगा।

(22) वक्तव्य के दौरान वक्ता को मोबाइल अथवा पुस्तकों आदि का उपयोग करने की अनुमति नहीं होगी।

(23) वक्तव्य के दौरान वक्ता को अपने पंथ, मत, सम्प्रदाय, गुरु आदि की प्रशंसा अथवा श्रेष्ठता सिद्ध करने के बजाय प्रवर्तित विषय/प्रश्न पर ही अपना वक्तव्य केन्द्रित करते हुए अपना वक्तव्य रखना होगा। परन्तु वक्ता अपने सम्प्रदाय, गुरु व उसकी किसी रचना से उद्धरण आदि अपनी बात के समर्थन में दे सकेगा।

(24) शास्त्रार्थ कार्यक्रम के प्रतिभागियों को संचालक मण्डल द्वारा किसी प्रकार का पारितोषिक, यात्रा व्यय अथवा धन आदि देय नहीं होगा अपितु शास्त्रार्थ कार्यक्रम में उनका प्रतिभाग पूर्णतः ऐच्छिक व धनापेक्षा के बिना होगा।

(25) कार्यक्रम के अन्त में श्रोताओं की टिप्पणियाँ जानने के लिए 2–4 श्रोताओं से सम्पन्न हुए शास्त्रार्थ पर 2–3 मिनट में उनके विचार जानने के लिए निर्णायक मण्डल उनसे कुछ बोलने हेतु आग्रह कर सकेगा।

(26) शास्त्रार्थ कार्यक्रम की वीडियोग्राफी होगी जो प्रसारण हेतु समाचार–पत्रों व टेलीवीज़न चैनलों को भी सुलभ कराई जावेगी और उसकी सी.डी. बाद में प्रत्येक टीम को भी भेजी जावेगी।

(27) शास्त्रार्थ कार्यक्रम की समाप्ति पर प्रतिभागीगण एवं आमंत्रित अतिथियों हेतु स्वल्पाहार की व्यवस्था रहेगी।

दिनांक 28.02.2021 को गोमतीनगर विस्तार, लखनऊ स्थित कावेरी परिसर में संपन्न हुए शास्त्रार्थ में प्रतिभाग करने वाले विद्वानों के नामों की सूचीः

टीम संख्याः 01

1. डॉ. श्यामधर तिवारी, पी–एच0 डी0, व्याकरणाचार्य, अशर्फी भवन, अयोध्या
2. श्री गोपेश दुबे, कथा व्यास, अशर्फी भवन, अयोध्या
3. श्री हितेश अवस्थी, आचार्य, शिक्षाशास्त्री, अशर्फी भवन, अयोध्या
4. डा0 शालिनी शर्मा उपाध्याय, आई0आर0एस0, संयुक्त आयुक्त, स्नातकोत्तर, पीएच0डी0, राजस्थान विश्वविद्यालय

टीम संख्याः 02

1. डा. राम कल्प उपाध्याय (गुरुजी), राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व वैदिक धर्म संघ
2. डा. गायत्री प्रसाद उपाध्याय, बी0ए0एम0एस0, कार्यकारिणी सदस्य, विश्व वैदिक धर्म संघ
3. आचार्य विष्णु दत्त तिवारी, शास्त्र मर्मज्ञ , कार्यकारिणी सदस्य, विश्व वैदिक धर्म संघ
4. डा. केशरी कुमार तिवारी, पीएच0डी0, ज्योतिषाचार्य, कार्यकारिणी सदस्य, विश्व वैदिक धर्म संघ

टीम संख्याः 03

1. श्री कमल जी, भगवद् भक्त, पुरूषोत्तम धाम आश्रम, पुरूषोत्तम नगर, सिद्धौर, बाराबंकी
2. श्री चन्दू तिवारी जी, भगवद् भक्त, मध्य प्रदेश
3. महात्मा दशरथ जी, भगवद् भक्त, पुरूषोत्तम धाम आश्रम, पुरूषोत्तम नगर, सिद्धौर, बाराबंकी
4. श्री आबिद आलम खान साहब जी, भगवद् भक्त, पुरूषोत्तम धाम आश्रम, पुरूषोत्तम नगर, सिद्धौर, बाराबंकी
5. श्री रोहित शुक्ल, भगवद् भक्त, पुरूषोत्तम धाम आश्रम, पुरूषोत्तम नगर, सिद्धौर, बाराबंकी

टीम संख्याः 04

1. डॉ0 शिवदत्त पाण्डेय, पीएच0डी0, व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, वेद वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम, महर्षि दयानन्द नगर, धनपतगंज, सुल्तानपुर, उत्तर प्रदेश
2. डॉ0 प्रियंका पाण्डेय, साहित्याचार्य, एम0ए0, पी–एच0डी0, वेद वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम, धनपतगंज, सुल्तानपुर

3. आचार्य सत्यव्रत वेदाचार्य, वेद वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल आश्रम, धनपतगंज, सुल्तानपुर
4. आचार्य अखिलेश मेधावी, एम0एस–सी0, वेदाचार्य, लखनऊ

टीम संख्याः 05

1. डा0 कृष्ण मुरारी (स्वामी जी), श्रीधाम, वृन्दावन
2. डा. मनोज कुमार सिंह, आयुष चिकित्साधिकारी, मथुरा

निर्णायक मण्डल (28.02.2021)

(1) प्रोफेसर बिन्दा प्रसाद मिश्र, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (**अध्यक्ष**)
(2) जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्रीधराचार्य महाराज, अयोध्या (**सदस्य**)
(3) पद्मश्री प्रोफेसर बृजेश कुमार शुक्ल, आचार्य एवं संकायाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (**सदस्य**)
(4) आचार्य भारत भूषण त्रिपाठी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ (**सदस्य**)
(5) स्वामी आनन्द योगी, गीता मर्मज्ञ, मिशीगन, अमेरिका (**सदस्य**)

शास्त्रार्थ कार्यक्रम आयोजकः एस0एस0 उपाध्याय, पूर्व न्यायाधीश/विधिक परामर्शदाता मा0 राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

शास्त्रार्थ कार्यक्रम उद्घोषकः चन्द्र भूषण पाण्डेय, वरिष्ठ वित्त अधिकारी, कारागार विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ

****